कुछ प्रसिद्ध तबला–वादकों का जीवन परिचय

SHUBHAM VERMA
Guest Lecturer
Department of Music
C.S.J.M. University, Kanpur

सारांश

अहमद जान थिरकवा का जन्म मुरादाबाद (उ0प्र0) में सन् 1891 को एक संगीत परिवार में हुआ था। आपके पिता का नाम हुसैन बख्श खाँ था। आप अपने उपनाम 'थिरकवा' से प्रसिद्ध हुए। बनारस के सुप्रसिद्ध तबलावादक पं0 सामता प्रसाद मिश्र अपने उपनाम 'गुदई महाराज' के नाम से संगीत जगत में अधिक प्रसिद्ध हुए। आपका जन्म 19 जुलाई सन 1920 को सुप्रसिद्ध नगरी वाराणसी के कबीर चौरा मोहल्ले में व्यावसायिक संगीतज्ञों के एक परिवार में हुआ था। आपके पिता का नाम पं0 बाचा मिश्र था। उस्ताद अल्ला रक्खा का जन्म 1915 में रतनगढ़ जनपद के गुरदासपुर में एक किसान परिवार में हुआ। अल्ला रक्खा जी ने 15–16 वर्ष की अवस्था में पठानकोट की एक नाटक कम्पनी में काम करना शुरू कर दिया। अमीर हुसैन खाँ का जन्म मेरठ जनपद के बनखेड़ा नामक ग्राम में सन् 1899 में हुआ। आपके पिता का नाम अहमद बख्श खाँ था जो कि एक ख्यातिप्राप्त सारंगी वादक थे।

मुख्य शब्द–उस्ताद, थिरकवा, गुदई महाराज, राजाश्रय, रियाज़, मास्टर–जी।

अहमद जान थिरकवा

उस्ताद जी का जन्म मुरादाबाद (उ0प्र0) में सन् 1891 को एक संगीत परिवार में हुआ था। आपके पिता हुसैन बख्श खाँ, नाना कलन्दर बख्श, चाचा शेर खाँ व मामा फैय्याज खाँ व बसवा खाँ गुणी और प्रसिद्ध कलाकार थे। इन सभी से शिक्षा प्राप्त करने के बाद खाँ साहब मुम्बई चले गये और उस्ताद मुनीर खाँ की शिष्यता ग्रहण कर ली और अनेक वर्षों तक उनकी देखरेख में कठोर रियाज़ किया। आप अपने उपनाम 'थिरकवा' से प्रसिद्ध हुए।

उस्ताद अहमद जान की तबले पर थिरकती हुई उंगलियों के कारण उनको 'थिरकवा' कहा जाने लगा और उसी नाम से संगीत जगत में आपकी पहचान बनी। उस्ताद को रामपुर दरबार का

राजाश्रय भी प्राप्त था। वहीं से वे भातखण्डे हिन्दुस्तानी संगीत महाविद्यालय, लखनऊ में प्रोफेसर के पद पर नियुक्त हुए और जीवन के अन्त तक लखनऊ में ही रहे। आपने प्रसिद्ध बाल गंधर्व की 'महाराष्ट्र नाटक कम्पनी' में तबला वादन करके अपार लोकप्रियता प्राप्त की। उस्ताद अहमद जान को देश के संगीतज्ञों के बीच बड़ा आदर प्राप्त था। जीवन में आपको अनेक मान सम्मान व उपाधियाँ मिली। उनमें से मुख्य सन् 1953–54 में राष्ट्रीय पुरस्कार और सन् 1970 में भारत सरकार द्वारा सम्मानजनक पद्मभूषण मुख्य है। आपके जीवन पर एक वृत्तचित्र भी बना है।[1]

उस्ताद अहमद जान थिरकवा चारो पट के तबलिये थे। आपको दिल्ली और फर्रूखाबाद घरानों की वादन शैली पर अद्भुत अधिकार प्राप्त था। आप अपने सोलो वादन के लिए अधिक जाने गये, जिसमें वे परम्परा निर्वाह पर अधिक केन्द्रित रहा करते थे। उस्ताद जी की बोलो की पढ़न्त अत्यन्त आकर्षित रहती थी। बाल्यावस्था से ही आप अपनी कला में इतना तल्लीन रहे कि आप अपना नाम भी लिखना नहीं सीख सके। उस्ताद के तीनों पुत्रों का नाम नबी जान, मोहम्मद जान और अली जान था। आपके शिष्यों में एक बड़ी कतार है, जो इस प्रकार है– स्व0 प्रेमवल्लभ (दिल्ली), स्व0 पद्मभूषण निखिल घोष (मुम्बई), सूर्यकान्त गोखले, नारायण राव जोशी, प्रो0 सुधीर वर्मा, सरवत हुसैन, राम कुमार शर्मा, लालजी गोखले (पुणे) आदि।

उस्ताद जी ने देश के सभी प्रतिष्ठित संगीत सम्मेलनों में प्रस्तुति दी तथा आकाशवाणी व दूरदर्शन के राष्ट्रीय कार्यक्रमों में अनेक बार प्रसारण किया। मुख्य रूप से आपके सोलो वादन के कई ग्रामोफोन रिकार्ड उपलब्ध हैं जिनसे आपके जीवंत वादन की झलक आज भी मिलती है। थिरकवा जी अपने जीवन के अन्तिम समय में कुछ दिनों के लिए मुम्बई चले गये। परन्तु आपको लखनऊ से अत्यधिक प्रेम था। अपने जीवन के संध्याकाल में उनकी दो ही ख्वाहिशें थीं कि जब तक जिन्दा रहूँ तबला बजाता रहूँ और दूसरी कि अन्तिम साँस लखनऊ में ही लूँ। माँ सरस्वती ने इस साधक पुत्र की दोनों इच्छायें पूरी की। खाँ साहब मोहर्रम करने लखनऊ आये पुनः बम्बई जाने की तैयारी की, सवारी पर बैठे, खुदा हाफिज कहा और अलविदा हो गये। वह अशुभ दिन 13 जनवरी सन 1976 का था।

सामता प्रसाद मिश्र (गुदई महाराज)

बनारस के सुप्रसिद्ध तबलावादक पं0 सामता प्रसाद मिश्र अपने उपनाम 'गुदई महाराज' के नाम से संगीत जगत में अधिक प्रसिद्ध हुए। आपका जन्म 19 जुलाई सन 1920 को सुप्रसिद्ध नगरी

वाराणसी के कबीर चौरा मोहल्ले में व्यावसायिक संगीतज्ञों के एक परिवार में हुआ था। आपके पिता का नाम पं0 बाचा मिश्र था। पंडित जी जब 9 वर्ष के थे तभी आपके पिता का स्वर्गवास हो गया था। आपके तबलावादन के आगे की शिक्षा उस समय के प्रकाण्ड विद्वान पं0 विक्रमादित्य मिश्र उर्फ विक्कू महाराज से हुई। लगभग 16 वर्षों के शिक्षण काल में पंडित जी ने घनघोर अभ्यास किया जिससे उनके हाथ में ऐसी चमक पैदा हो गयी कि जहाँ–जहाँ भी उनका तबलावादन हुआ वहाँ–वहाँ वे छाते गये।

पं0 सामता प्रसाद की ख्याति इलाहाबाद में सन् 1942 के संगीत सम्मेलन से बढ़ी। यह आपके जीवन का प्रथम अवसर था, जबकि आपको इतने बड़े संगीत सम्मेलन में अवसर मिला वहाँ देश के महान कलाकारों के साथ संगत करके अपने चमत्कार से शीघ्र ही ख्याति प्राप्त कर ली। फिर क्या था – देश के कोने–कोने से निमंत्रण आने लगे और जहाँ भी आपका वादन हुआ लोगों ने प्रशंसा की।[2]

पं0 सामता प्रसाद ने फिल्मों के माध्यम से तबला वादन में ख्याति अर्जित की। कुछ फिल्मों के नाम इस प्रकार हैं– मेरी सूरत तेरी आँखे, बसन्त बहार, झनक–झनक पायल बाजे, जलसा घर, शोले, नवाब वाजिद अली शाह, सुरेर प्यासी। पं0 सामता प्रसाद को जीवन में अनेक मान–सम्मान व उपाधियाँ मिली। उनमें से कुछ मुख्य हैं– तबले का जादूगर, ताल शिरोमणि, तबला सम्राट, ताल विलास, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, हाफिज अली खाँ सम्मान और सन् 1972 में पद्मश्री और 1992 में पद्मभूषण जैसे सर्वोच्च सम्मान मिले।

पं0 सामता प्रसाद मिश्र जी 21 मई 1994 को तबले की एक कार्यशाला में भाग लेने पुणे पहुँचे, वहाँ दिल का जानलेवा दौरा पड़ा और वहीं आप 31 मई 1994 को चिरनिद्रा में विलीन हो गये।

अल्ला रक्खा

उस्ताद अल्ला रक्खा का जन्म 1915 में रतनगढ़ जनपद के गुरदासपुर में एक किसान परिवार में हुआ। अल्ला रक्खा जी ने 15–16 वर्ष की अवस्था में पठानकोट की एक नाटक कम्पनी में काम करना शुरू कर दिया। वहाँ आप तबला वादक लाल मोहम्मद के सम्पर्क में आये। कुछ वर्षों के बाद आप अपने चाचा के साथ लाहौर (पाकिस्तान) चले गये और वहाँ उस्ताद कादिर बख्श

के शिष्य बन गये और उनसे पंजाब घराने की वादन शैली की विधिवत शिक्षा प्राप्त की। वहाँ पर शिक्षा के साथ–साथ एक रिकार्डिंग कम्पनी में भी काम करते थे।

उस्ताद सन् 1937 से 1942 तक दिल्ली और मुम्बई की आकाशवाणी के केन्द्रों में तबला वादक के रूप में कार्यरत रहे। उसे छोड़कर आप फिल्मी दुनिया में प्रवेश कर गये और संगीत निर्देशक ए0आर0 कुरैशी के नाम से माँ–बाप, सबक, मदारी, आलम आरा, जग्गा और अनेक पंजाबी फिल्मों को सात सुरों में पिरोकर ख्याति प्राप्त किया।[3]

मुम्बई महानगरी में 'मास्टर–जी' के नाम से विख्यात इस सरस्वती पुत्र के अनेक शिष्य हैं। परन्तु जो ख्याति आपके ज्येष्ठ पुत्र उस्ताद जाकिर हुसैन ने प्राप्त की वह बेमिसाल है। आपके अन्य दो पुत्र हैं– फजल कुरैशी और तौफीक कुरैशी। आपके प्रमुख शिष्यों में – पं0 योगेश समसी और अनुराधा पाल जो कि एक महिला तबलावादक हैं। सन 1977 में मास्टर जी को पद्मश्री की उपाधि से सम्मानित किया गया। कठिन तालों में पूर्ण अधिकार तथा लयकारी के काम में प्रवीण उस्ताद संगति और स्वतंत्र वादन दोनों में निष्णान्त थे। स्याही के बोलों पर आपको असाधारण अधिकार प्राप्त था।

आपका निधन 3 फरवरी सन् 2000 को मुम्बई में हो गया। इसी तिथि को पिछले 18 वर्षों से आपके पुत्र उस्ताद जाकिर हुसैन 'अब्बा जी की बरसी' नामक कार्यक्रम हर वर्ष आयोजित करते हैं जिसमें पूरे विश्व से विभिन्न प्रकार के संगीतज्ञ अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं।

अमीर हुसैन खाँ

अमीर हुसैन खाँ का जन्म मेरठ जनपद के बनखेड़ा नामक ग्राम में सन् 1899 में हुआ। आपके पिता का नाम अहमद बख्श खाँ था जो कि एक ख्यातिप्राप्त सारंगी वादक थे। अमीर हुसैन खाँ की प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता से हुई। बम्बई के सुप्रसिद्ध कलाविद् उस्ताद मुनीर खाँ बालक अमीर के मामा थे और वे प्रायः हैदराबाद आया करते थे। अपने खाली समय में वे बालक अमीर को तालीम भी दिया करते थे। परन्तु उनके बम्बई वापस लौटते ही यह क्रम टूट जाता था। अतः किशोर अमीर हुसैन ने 1914 में बम्बई जाने का निश्चय किया जिससे तालीम व रियाज में रुकावट न आये। सन् 1923 में जब अमीर खाँ साहब 24 वर्ष के थे, आपने रायगढ़ में चमत्कारी तबलावादन करके समकालीन कला पारखी नरेश चक्रधर सिंह से आशीर्वाद एवं बड़ी राशि पुरस्कार में प्राप्त की।

उस्ताद अमीर हुसैन खाँ ने दिल्ली और फर्रूखाबाद के विपुल भण्डार को अपनी रचनाओं के योग से विपुलतम बना दिया। 1961 में गांधर्व महाविद्यालय मण्डल ने आपका सम्मान किया था। खाँ साहब के सोलो वादन का एक लांग प्ले रिकार्ड भी उपलब्ध है।[4]

उस्ताद अमीर खाँ साहब के प्रमुख शिष्यों में पद्मभूषण निखिल घोष, पंढरीनाथ नागेश्कर, गुलाम रसूल, बाबा साहब निरजकर, इकबाल हुसैन, आनन्द बोडस के अतिरिक्त बम्बई की पारसी महिला तबला वादक डा0 अबान मिस्त्री हुईं।

उस्ताद अमीर हुसैन खाँ साहब की मृत्यु 5 जनवरी सन् 1969 को मुम्बई में हुई।

संदर्भ सूची–

1. गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव–तालकोश, पृ0 25
2. गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव–ताल प्रभाकर प्रश्नोत्तरी, पृ0 47
3. गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव–ताल परिचय भाग–3, पृ0 166
4. गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव–ताल परिचय भाग–3, पृ0 165